अब तक डेढ़ लाख छपी

दैनिक यज्ञ प्रकाश

प्राप्ति स्थान :— खन्ना बुक डिपो



पुराना हस्पताल रोड, जम्मू



सम्पादक :— श्री पण्डित देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक

प्रकाशक :— आर्य युवक संघ, दरियागंज दिल्ली

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक प्रेस पाटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली—७

ग्यारहवींबार १०००० } दयानन्दाब्द १३१ विक्रमाब्द २०१२ { मू० एक आना

❀ ओ३म् ❀

विनम्र निवेदन

वैदिक धर्म प्रचार के लिये जहां व्याख्यान, शास्त्रार्थ, कथा आदि साधन आवश्यक हैं वहां साहित्य द्वारा प्रचार का साधन भी बहुत ही महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। इसलिए महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज व्याख्यानों और शास्त्रार्थों के साथ साथ साहित्य निर्माण के कार्य में भी लगे रहते थे। यद्यपि आज महर्षि हमारे मध्य में विराजमान नहीं हैं तथापि महर्षि की अमर रचना सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रंथ आज भी विश्व को प्रकाश दिखा रहे हैं। धर्मवीर स्वर्गीय श्री पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर ने आज से ६० वर्ष पूर्व आर्यसमाज को यही आदेश दिया था कि—

"*आर्यसमाज में लेख का कार्य बन्द न हो।*"

हर्ष की बात है कि आर्य जनता की अपनी ही संस्था "सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटिड दिल्ली" ने अल्पकाल में ही महर्षि दयानन्द जीवन, सत्यार्थ प्रकाश सामवेद आदि ग्रन्थ प्रचारार्थ अत्यन्त सस्ते मूल्य में देकर भारी कार्य किया है। निःसन्देह यह संस्था सम्पूर्ण आर्य जगत् के धन्यवाद की पात्र है।

आर्य युवक संघ दरियागञ्ज दिल्ली ने इसी ध्येय की पूर्ति के लिए छोटे छोटे सस्ते ट्रैक्टों द्वारा प्रचार कार्य प्रारम्भ किया है। मुझे प्रसन्नता है कि इस कार्य में सार्वदेशिक प्रेस दिल्ली हमें पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहा है।

संघ ने अभी अभी १. माता पिता आचार्य, २. धर्म का सेवन, ३. आर्य समाज की वेदी पर नाटक क्यों, ४. ब्रह्मचर्य साधन, ५. महात्मा हंसराज ६. खान-पान, ७. ऋषि की सुनो, ८. स्टेशन मास्टर, ९. वेदामृत आदि ट्रैक्ट प्रकाशित किये जो हाथों हाथ बिक गये।

इसी प्रकार समय २ पर अन्य पुस्तिकायें आपकी सेवा में भेंट करते रहेंगे।

यह *दैनिक यज्ञ प्रकाश* आपके हाथ में है आप देख सकते हैं कि इस अत्यन्त सस्ती पुस्तक में १६ भजनों सहित दैनिक यज्ञों का पूर्ण रूपेण वर्णन है। यही कारण है आर्य सज्जनों ने इसके १।। लाख के १० संस्करण हाथों हाथ अपना लिए है। अब ११ वां संस्करण प्रकाशित किया गया है। जो सज्जन ५०० पुस्तक एक साथ लेंगे उनका शुभ नाम पुस्तक पर अंकित होगा और उन्हें ५) सैंकड़े में दी जावेगी।

भवदीय :—

देवव्रत धर्मेन्दु

मन्त्री, आर्य युवक संघ दरियागंज दिल्ली।

✻ ओ३म् ✻

जिस प्रकार शरीर की रक्षा के लिये प्रतिदिन सात्विक भोजन आवश्यक है उसी प्रकार आत्मा और अन्तःकरण की पवित्रता के लिये परमात्मा की उपासना भी आवश्यक है। भगवान् मनु लिखते हैं—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ॥ मनु० ॥

अर्थ—जल से शरीर, सत्य से मन, विद्या तथा तप से आत्मा और ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है जल मृत्तिकादि से नहीं।

सन्ध्या अवश्य करें

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम्।
स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः ॥ मनु० ॥

अर्थ—जो मनुष्य नित्य प्रातः और सायं को सन्ध्योपासना नहीं करता उसको शूद्र के समान समझ कर द्विज कुल से अलग करके शूद्र कुल में रख दे।

भोजन के समय का मन्त्र

ओं अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे

यज्ञोपवीत का मन्त्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

✻ प्रातः काल पाठ करने के मन्त्र ✻

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥ १ ॥
ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥ २ ॥
ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ ३ ॥
ओं उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्र पित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥ ४ ॥
ओं भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ॥ ५ ॥

॥ सोते समय पढ़ने के मन्त्र ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥
यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥
यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथना भाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥
सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

सन्ध्या (ब्रह्म यज्ञ)



प्रातःकाल शौच, वायु सेवन, दन्त धावन, तैल मर्दन तथा स्नान करके पवित्र मन और एकाग्रचित्त हो कर कम से कम तीन प्राणायाम करें। पुनः गायत्री मन्त्र पढ़ कर शिखा-बन्धन करें।

निम्न मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें।

ओं शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः

सर्वव्यापक परमेश्वर मनोवांछित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हो और हम पर सुख की सब ओर से वृष्टि करे ॥१॥

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणःप्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कंठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे।

हे अन्तर्यामिन् ! मैं प्रार्थना करता हूं कि मैं जान बूझकर अपनी ज्ञान तथा कर्म इन्द्रियों से, अर्थात् वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और करपृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूं, ऐसी कृपा करो ॥२॥

मार्जन मन्त्र

ओं भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः ।
ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये ।
ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । ओं तपः पुनातु पादयोः ।
ओं सत्य पुनातु पुनः शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।

हे दयानिधे ! आप मेरी इन्द्रियें, अर्थात् शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पाँव आदि को पवित्र करके बलवान् और यशस्वी कीजिए।

प्राणायाम मन्त्र

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः ।
ओं तपः । ओं सत्यम् ।

प्राणस्वरूप, प्राणों से प्यारा, दुःख दूर करने हारा, सर्वव्यापक, आनन्द-स्वरूप, सब से बड़ा, सबका (जनक) पिता, दुष्टों को संतापकारी, सबके जानने वाला और अविनाशी प्रभु है

अघमर्षण मन्त्र

ओं ऋतं च सत्यश्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥

परमेश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेद-विद्या और कार्यरूप प्रकृति उत्पन्न हुई। उसी की सामर्थ्य से प्रलय और उसी की सामर्थ्य से जल के समुद्र उत्पन्न हुए॥१॥

ओं समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

जगत् को वश में रखने वाले परमेश्वर ने अपने सहज स्वभाव से जलकोष के पीछे काल के विभाग—वर्ष, दिन और रात्रि—रचे ॥२॥

ओं सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

विधाता ने पहले कल्प जैसे सूर्य, चन्द्र, द्युलोक, पृथ्वीलोक अन्तरिक्ष और उसमें फिरने वाले सब लोक लोकान्तर बनाए ॥३॥

पुनः 'शन्नो देवी०' मन्त्र से तीन आचमन करें।

॥ मनसा परिक्रमा मन्त्र ॥

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽऽदित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥

हे सर्वज्ञ परमेश्वर! आप हमारे सम्मुख की ओर विद्यमान हैं, स्वतन्त्र राजा और हमारी रक्षा करने वाले हैं आपने सूर्य की रचना है जिसकी किरणों द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है। आपके आधिपत्य, रक्षा और जीवनरूपी प्रदान के लिए, प्रभो! आपको बारम्बार नमस्कार है। जो अज्ञानवश हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे आपके न्यायरूपी सामर्थ्य पर छोड़ देते हैं ॥१॥

ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२

हे परमेश्वर! आप हमारे दक्षिण की ओर व्यापक हैं। आप हमारे राजाधिराज हैं, और भुजंगादि बिना हड्डी वाले पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं, और ज्ञानियों के द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते हैं। आपके आधिपत्य ··(आगे पूर्व मन्त्र के अर्थ के समान) ॥२॥

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥

हे सौंदर्य के भण्डार! आप हमारे पृष्ठ की ओर हैं, हमारे महाराज हैं, बड़े २ हड्डी वाले और विषधारी पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं। आपके... (आगे पूर्ववत्) ॥३॥

ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥

हे पिता ! आप हमारे वाम पार्श्व में व्यापक है और हमारे परम ऐश्वर्य युक्त स्वामी हैं। स्वयम्भू और हमारे रक्षक हैं, आप ही बिजली द्वारा हमारी रुधिर-गति की और प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके...

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५

हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप हमारे नीचे की ओर के देशों में विद्यमान् हैं। आप रङ्ग वाले वृक्षों और बेलों द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं। आप के .. (आगे पूर्ववत्) ॥ ५ ॥

ओं ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

हे महान् प्रभो ! आप ऊपर के लोकों में व्यापक, पवित्रात्मा, हमारे स्वामी और रक्षक हैं। आप वर्षा करके हमारी कृषि को सींचते हैं जिससे हमारा जीवन होता है। आपके.... (आगे पूर्ववत्) ॥ ६ ॥

उपस्थान मन्त्र

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥

हे प्रभो ! आप अज्ञान अन्धकार के परे, सुखस्वरूप, प्रलय के पश्चात् रहने वाले, दिव्य गुणों के साथ सर्वत्र विद्यमान् देव और हम को जन्म देने वाले हैं, हम आपके उत्तम ज्योति स्वरूप को प्राप्त हों।

ओम् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥

हे जगदीश्वर ! आप सकल ऐश्वर्य के उत्पादक, सर्वज्ञ, जीवात्मा के प्रकाशक हैं, आपकी महिमा सबको दिखाने के लिए संसार के पदार्थ, पताका का काम देते हैं। जिस प्रकार झंडियां मार्ग दिखलाती हैं उसी प्रकार सबको सृष्टि-नियम परमेश्वर की प्रतीति कराते हैं ॥२॥

ओं चित्रं देवाना मुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च स्वाहा

हे स्वामिन्! इस संसार के समस्त पदार्थ आपको दर्शाते हैं। आप दिव्य पदार्थों के बल हैं। सूर्य, चन्द्र, और अग्नि के चक्षु अथवा प्रकाशक हैं। भूमि, आकाश और तदन्तर्गत लोक सब आपके सामर्थ्य में हैं। आप चर-अचर जगत् के उत्पादक और अन्तर्यामी हैं। हे प्रभो! हम सदैव मन, वाणी और कर्म से सत्य को ग्रहण करें ॥३॥

ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

हे सब के चक्षु! आप अनादि काल से विद्वानों और संसार के हितार्थ शुद्ध वर्तमान हैं। प्रभो! हम आपका ज्ञान सौ वर्ष सुनें, आपके नाम का सौ वर्ष व्याख्यान करें, सौ वर्ष की आयु भर पराधीन न हों और यदि योगाभ्यास से सौ वर्ष से भी अधिक आयु हो तो इसी प्रकार विचरें॥४

गायत्री मन्त्र **ओम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।** यजु० अ० ३६। मं ३॥

हे प्राण-स्वरूप दुःखहर्ता और व्यापक आनन्द के देने वाले प्रभो! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं हम आपके उस पूजनीयतम, पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। पिता! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

(अथ समर्पण) **हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि-कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः॥**

हे परमेश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।

नमस्कार मन्त्र **ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥१॥**

नमस्कार है कल्याण के और सुख के स्रोत (चश्मे) को; कल्याण के देने वाले और सुख के देने वाले प्रभु को नमस्कार है; कल्याण-स्वरूप प्रभो आपको बारम्बार हमारा नमस्कार है।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

॥ अथ ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनामन्त्राः ॥

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

अथ स्वस्तिवाचनम्

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम् ॥१॥
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव सचस्वा न स्वस्तये ॥२॥
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥४॥
स्वस्ति वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥४॥
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥५॥
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च

स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्र-
मसाविव । पुनर्ददताघ्नता जानता सङ्गमेमहि ॥७॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥
येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्तां आदित्यां अनुमदा स्वस्तये ॥९॥
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥१०
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
तां आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदितिं स्वस्तये ॥
को व स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन ।
को वोऽध्वरं तु विजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥१२॥
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥
भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽंहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥
अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रा मघायतः ।

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥
अरिष्टः से मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हि ते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥
स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥२२॥
इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय ।
कर्मण आ प्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा
मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात
बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥२४॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभि नो नि वर्तताम् ।
देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२५॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिः नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरङ्गै स्तुष्टवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८॥

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ।
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वा अद्य दधातु मे ॥३१॥

अथ शान्तिप्रकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः शं इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धि शमु संतु राय ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शँ न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः । ४॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥६।
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणःशमु शन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ।७।
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः। ८॥
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायु ॥९

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥१०
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाच शमुरातिषाचः शं नो दिव्याःपार्थिवाःशं नो अप्याः ॥११
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥१३॥
इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१४॥

शं नो वातः पवताᳬं शं नस्तपतु सूर्य्यः।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥१५॥

अहानि शं भवन्तु नः शᳬं रात्रीः प्रतिधीयताम्।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शं न इन्द्रपूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥१६॥
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।
ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬंशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-रोषधयःशान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳬंशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳬंशृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥
यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२०॥

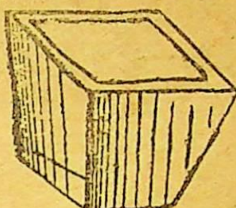
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२१॥
यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२२
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२३॥
यस्मिन्नृचः साम यजूᳬंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तᳬंसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२४॥
सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२५॥
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शᳬंराजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥
अभयं नः करन्त्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥२७॥
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् । अभयं
नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥२८॥

यज्ञ समिधा—पलाश, शमी पीपल, बड़, गूलर, आम, बिल्व आदि की समिधा वेदी के प्रमाण छोटी बड़ी कटवा लेवें। परन्तु ये समिधा कीड़ा लगी, मलिन देशोत्पन्न और अपवित्र पदार्थ आदि से दूषित न हों। अच्छे प्रकार देख लेवें और चारों ओर बीच में चुनें।

होम के द्रव्य चार प्रकार—प्रथम सुगन्धित कस्तूरी, केशर, अगर, तगर, चन्दन श्वेत, इलायची, जायफल, जावित्री आदि (द्वितीय पुष्टिकारक) घृत दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूँ.उड़द आदि। (तीसरी मिष्ट) शक्कर, शहद, छुहारे, दाख आदि (चौथे रोग नाशक) सोमलता अर्थात् गिलोय आदि औषधियाँ।

यज्ञ कुण्ड—सोना, चांदी, तांबा, लोहा वा मिट्टी का बनवा लेना चाहिये।
यज्ञ पात्र - सोना, चांदी, तांबा व पलाशादि लकड़ी का हो।

यज्ञ-हवन [देव यज्ञ]



❀ प्रथम निम्न तीन मन्त्रों से आचमन करे ❀

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥

ओं सत्यं यश श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

❀ निम्न मन्त्रों से जल लेकर अंग स्पर्श करे ❀

ओं वाङ् मऽआस्येऽस्तु ॥१॥ (मुख को स्पर्श करे)

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥२॥ (दोनों नथनों को स्पर्श करे)

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥३॥ (दोनों आंखों को स्पर्श करे)

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥४॥ (दोनों कानों को स्पर्श करे)

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥५॥ (दोनों भुजाओं को स्पर्श करे)

ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥६॥ (दोनों जंघाओं को स्पर्श करे)

ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥७॥ (सारे शरीर पर)

निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि को प्रदीप्त करे ।

ओं भूर्भुवः स्व ॥ गोभिल गृ० पृ० १ । ख० १ । सूत्र ११ ॥

फिर अगले मन्त्र को बोल कर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दे ।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥१॥

निम्न मन्त्र से अग्नि को प्रज्वलित करे ।

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬसृजेथामयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥२॥

नीचे लिखे मन्त्रों से तीन समिधा घृत में भिगो कर तीन बार आहुतियां दें ।

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥१॥

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम ॥२॥

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥३॥

(दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा)

ओं तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम ॥४॥ (इससे तीसरी समिधा)

निम्न मन्त्र से घी की पांच आहुतियां दें।

ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ॥१॥

इन मन्त्रों से वेदी के चारों ओर जल छिड़कें

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ॥१॥ इससे पूर्व दिशा में)

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥२॥ (इससे पश्चिम में)

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥३॥ (इससे उत्तर में)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥४॥ यजुर्वेद अ० ३० मं० १॥ (इससे चारों ओर)

❋ आघारावाज्याहुति ❋

निम्न मन्त्रों से दो घृताहुति देवें।

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम॥१॥(वेदी के उत्तर भाग में)

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम॥२। (वेदी के दक्षिण में)

* आज्य भागाहुति *

(इन मन्त्रों से मध्य में घृताहुति देनी)

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥१॥
ओं इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥२॥

* महाव्याहृत्याहुति मन्त्र *

ओं भूरग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ॥१॥
ओं भुवर्वायवे स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम ॥२॥
ओं स्वरादित्याय स्वाहा । इदमादित्याय इदन्न मम ॥३॥
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ॥४॥

निम्न मन्त्र से स्विष्टकृत आहुति घृत अथवा भात की देनी चाहिये ।

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्स-मर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ॥५॥

प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोल के देनी चाहिये ।

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥३॥

अब प्रधान होम सम्बन्धी चार आहुतियां इन मन्त्रों से देवें ।

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्ज्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥१॥
ओं भूर्भुवः स्वः अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥२॥
ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥३॥

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ।। ४ ।।

साधारण हवन तथा संस्कारों में विशेष विशेष अवसर पर निम्नलिखित आठ आज्याहुति इन आठ मन्त्रों से दी जाया करती हैं ।

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽव यासिसीष्ठा ।
यजिष्ठो वह्नितम शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ।
इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम ।।१।।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा ।
इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम ।।२।।

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके स्वाहा ।
इदं वरुणाय इदन्न मम ।।३।।

ओं तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा ।
इदं वरुणाय इदन्न मम ।।४।।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा, बितता महांतः ।
तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य स्वर्केभ्यः
इदन्न मम ।।५।।

ओं अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि ।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजंं स्वाहा ।
इदमग्नये अयसे इदन्नमम ।।६।।

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।

अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽदितये स्याम स्वाहा।
इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च इदन्न मम। ७॥
ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्टं मा
यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्यां
इदन्न मम॥८॥

॥ प्रातःकाल आहुति के मन्त्र॥

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ १।
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। २॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ ३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥

॥ सायंकाल आहुति के मन्त्र॥

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।
ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। (मौन आहुति)
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा॥

॥ प्रातः सायं दोनों समय के मन्त्र॥

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम॥
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानायइदन्न मम
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा॥
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम॥
ओं आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा॥
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥९॥

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ॥

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ॥

ओं सर्वं वै पूर्णꣳस्वाहा ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

इस प्रकार प्रातः और सायंकाल सन्ध्योपासना के पीछे इन पूर्वोक्त मन्त्रों से होम करके अधिक होम करने की जहां तक इच्छा हो वहां तक स्वाहा अन्त में पढ़ कर गायत्री से होम करें ।

मन्त्र पाठ

ओं पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳशतक्रतो स्वाहा ॥

ओं पूर्णमिदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ओं तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ॥१॥ ओं आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ॥२॥ ओं वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ॥३॥ ओं अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ॥४॥ ओं मेधां मे देवः सविता आदधातु ॥५॥ ओं मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ॥६॥ ओं मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥७॥

ओं मयि मेधां, मयि प्रजां, मय्यग्निस्तेजो दधातु । मयि मेधां, मयि प्रजां, मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु । मयि मेधां, मयि प्रजां, मयि सूर्यो भ्राजो दधातु । ओं यत्ते अग्ने तेजस्तेनाहं तेजस्वी भूयासम् । यत्ते अग्ने वर्चस्तेनाहं वर्चस्वी भूयासम् । यत्ते अग्ने हरस्तेनाहं हरस्वी भूयासम् ॥

ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्र ब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ॥१॥

ओं वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्र ब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम ॥२॥ ओं सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्र ब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदं सूर्याय इदन्न मम ॥३॥ ओं चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्र ब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदं चन्द्राय इदन्न मम ॥४। ओं व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्र ब्रवीमि तच्छकेयम् । तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदमिन्द्राय व्रतपतये इदन्न मम ॥५॥

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।

❀ वैदिक प्रार्थना ❀

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ॥
बलमसि बलं मयि धेहि । ओजोऽस्योजो मयि धेहि ॥
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि । सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

व्याख्यान हे स्वप्रकाश ! अनन्ततेज ! आप अविद्यान्धकार से रहित हो, किंच सत्यविज्ञान तेजस्वरूप हो, आप कृपादृष्टि से मुझमें वही तेज धारण करो, जिससे मैं निस्तेज, दीन और भीरु कहीं कभी न होऊं । हे अनन्तवीर्य परमात्मन ! आप वीर्य्यस्वरूप हो. आप सर्वोत्तम बल स्थिर मुझ में भी रक्खें । हे अनन्तपराक्रम ! आप ओजः (पराक्रम-स्वरूप) हो, सो मुझ में भी उस पराक्रम का सदैव धारण करो । "हे दुष्टानामुपरि क्रोधकृत् !" अनन्त सहनस्वरूप ! मुझ में भी आप सहन सामर्थ्य धारण करो अर्थात् शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा इनके तेजादि गुण कभी मुझ में से दूर न हों जिससे मैं आपकी भक्ति का स्थिर अनुष्ठान करूं और आपके अनुग्रह से संसार में भी सदा सुखी रहूं ॥ ६ ।

पूर्णमासी की आहुतियां

ओं अग्नये स्वाहा ॥१॥ ओं अग्निषोमाभ्यां स्वाहा ॥२॥
ओं विष्णवे स्वाहा ॥३॥

अमावस्या की आहुतियां	ओं अग्नये स्वाहा ॥१॥ ओं इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ।२॥ ओं विष्णवे स्वाहा ॥३।

पितृ यज्ञ	अग्निहोत्र विधि पूर्ण करके तीसरा पितृयज्ञ करे अर्थात् जीते हुए माता पिता आदि की यथावत सेवा करनी 'पितृयज्ञ' कहाता है

* बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि *

निम्न १० मन्त्रों से घृत के पात्र में शक्कर आदि मिलाकर आहुति दें—

ओम् अग्नये स्वाहा । १॥ ओं सोमाय स्वाहा ॥२। ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥३॥ ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥ ओं धन्वन्तरये स्वाहा ॥५॥ ओं कुह्वै स्वाहा ॥६॥ ओम् अनुमत्यै स्वाहा ॥७॥ ओं प्रजापतये स्वाहा ॥८॥ ओं सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥९॥ ओं स्विष्टकृते स्वाहा ॥१०॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बलिदान करें :—

ओं सानुगायेन्द्राय नमः । इससे पूर्व।

ओं सानुगाय यमाय नमः ॥ इससे दक्षिण।

ओं सानुगाय वरुणाय नमः ॥ इससे पश्चिम।

ओं सानुगाय सोमाय नमः ॥ इससे उत्तर।

ओं मरुद्भ्यो नमः । इससे द्वार।

ओं अद्भ्यो नमः ॥ इससे जल।

ओं वनस्पतिभ्यो नमः ॥ इससे मूसल और ऊखल।

ओं श्रियै नमः ॥ इससे ईशान।

ओं भद्रकाल्यै नमः। इससे नैऋत्य।

ओं ब्रह्मपतये नमः ॥ ओं वास्तुपतये नमः ॥ इनसे मध्य।

ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥ ओं नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः। इससे ऊपर।

ओं सर्वात्मभूतये नमः ।। इससे पृष्ठ ।

ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।। इससे दक्षिण ।

इन मन्त्रों से एक पत्तल वा थाली में यथोक्त दिशाओं में भाग धरना । तत्पश्चात् घृतसहित लवणान्न लेके—

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् ।

वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि ।। मनु० अ० ३।९२।।

अर्थ—कुत्तों, कंगालों, कुष्ठी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों और चींटी आदि कृमियों के लिये छः भाग अलग-अलग बांट के दे देना और उनकी प्रसन्नता सदा रखना ।

※ अथातिथि यज्ञ ※

जो धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, पक्षपातरहित, शान्त, सर्वहित-कारक विद्वानों की अन्नादि से सेवा, उनसे प्रश्नोत्तर आदि करके विद्या प्राप्त होना 'अतिथि यज्ञ' कहाता है, उसको नित्य किया करें ।

इस प्रकार पंच महायज्ञों को स्त्री पुरुष प्रतिदिन करते रहें ।।५।।

※ ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त ※

सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। १ ।।

हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को ।। १ ।।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। २ ।।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ।।२।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः, समानेन वो हविषा जुहोमि ।।३।।

हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों ॥३॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ॥४॥

राष्ट्रीय प्रार्थना (१)

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे
राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः
पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु० अ० २२। मंत्र २२॥

ब्रह्मन् सुराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेज धारी।
क्षत्री महारथी हों, अरिदल विनाशकारी॥
होवें दुधारु गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही॥
बलवान सभ्य योधा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें॥
फल फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥ २ ॥

सब वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को॥
ध्रुव धर्म धरें, पर दुःख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें जगती भर को॥

यज्ञ प्रार्थना (३)

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये ॥ १ ॥
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें ॥ २ ॥
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चला कर लाभ दें संसार को ॥ ३ ॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥ ४ ॥
कामना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की।
भावनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर नार की ॥ ५ ॥
लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ॥ ६ ॥
स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
इदन्न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥ ७ ॥
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥ ८ ॥

भजन ४

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये। टेक ॥
कीजिये ऐसा अनुग्रह हम पैहे परमात्मा।
हों सभासद् इस सभा के सब के सब धर्मात्मा ॥ १ ॥
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से ॥ २ ॥
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे सुख सदा पावें सभी ॥ ३ ॥
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों। ४ ॥
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।
वायु जल सुखदाई होवें जायें मिट सारे कलेश ॥ ५ ॥

वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी ।
होवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी ॥ ६ ॥
लोभी कामी और क्रोधी कोई भी हम में न हो ।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ॥ ७ ॥
अच्छी संगत में रहें और वेद मारग पर चलें ।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें ॥ ८ ॥
कीजिये हम सब का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से ।
मान भक्तों में बढ़ाओ अपने भक्ति दान से ॥ ९ ॥

भजन ५

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो ॥
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो ॥
सब भांति सदा सुखदायक हो, दुख दुर्गुण नाशन हारे हो ॥
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ॥
भुलि हैं हम ही तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो ॥
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो ॥
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समुझे बिरले बुधवारे हो ॥
शुभ शांति निकेतन प्रेम निधे, मन मन्दिर के उजियारे हो ॥
यही जीवन के तुम जीवन हो, इन प्रानन के तुम प्यारे हो ॥
तुम सो प्रभु पाय 'प्रताप' हरि, केहि के अब और सहारे हों ॥

भजन ६

चंचल मन नित ओ३म् जपा कर, ओ३म् जपा कर ओ३म् ॥
पल २ छिन २ घड़ी २ निशदिन, ओ३म् जपा कर ओ३म् ॥
प्रात समय की सुख बेला में, सन्ध्या की पुलकित रजनी में ॥
रोम रोम से निकले तेरे, ओ३म् जपा कर ओ३म् ॥
गहरा सागर टूटी नैय्या, जीवन तरनी ओ३म् खिवैया ॥
पार करेंगे ओ३म्, ओ३म् जपा कर ओ३म् ॥
सार तत्त्व की खोज किये जा, नाम सरस रस रोज पिये जा ॥
पार करेंगे ओ३म्, ओ३म् जपा कर ओ३म् ॥

भजन ७

मगन ईश्वर की भक्ति में, अरे मन क्यों नहीं होता ।
पड़ा आलस्य में मूरख, रहेगा कब तलक सोता ॥

जा इच्छा है तेरे कट जांय, सारे मैल पापों के।
प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता॥
विषय और भोग में फंस कर, न कर बरबाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ति, लगा ले योग में गोता॥
नहीं संसार की वस्तु कोई भी सुख की हेतु है।
वृथा इनके लिये फिर क्यों, समय अनमोल तू खोता॥
धर्म ही एक ऐसा है, जो होगा अन्त को साथी।
न पत्नी काम आयेगी, न बेटा और कोई पोता॥
भटकता जा बजा नाहक, फिरे सुख के लिए सालिग।
तेरे हृदय के भीतर ही, बहे आनन्द का सोता॥

भजन ८

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद॥
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ सौ वार मुनिवर धन्यवाद॥
करते हैं जङ्गल में मङ्गल पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद॥
कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद॥
शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर में चाहिये करें नारी नर सब धन्यवाद॥
गान कर 'असीचन्द' भजनानन्द ईश्वर स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर धर धन्यवाद॥

भजन ९

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गङ्गा में नहाया, तो मन में मैल जरा न रहा॥
परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आंखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके, कोई उससे भेद छिपा न रहा॥
पुरुषार्थी ही इस दुनिया में, सब कामना पूरी करता है।
मन चाहा फल उसने पाया, जो आलसी बन के पड़ा न रहा॥

:दुखदायी है सब शत्रु हैं यह विषय हैं जितने दुनियां के।
वही पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फंसा न रहा ॥
यहां वेद विरुद्ध जब मत फैले, प्रकृति की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई, फिर ज्ञान का पांव जमा न रहा ॥
यहां बड़े बड़े महाराज हुए. बलवान् हुए विद्वान हुए।
पर मौत के पंजे से "केवल" कोई दुनियां में आके बचा न रहा ॥

भजन १०

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन।
क्यों न हो उसको शांति क्यों न हो उसका मन मगन ॥१॥
काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली।
इनके हनन के वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन ॥२॥
ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शांति से तू।
पैदा न हो ईर्षा की आंच दिल में करे कहीं जलन ॥३॥
मित्रता सबसे मन में रख त्याग के वैर भाव को।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को ठीक कर अपना तू चलन ॥४॥
जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह जगत।
उसका ही रख तू आश्रय उसकी ही तू पकड़ शरण ॥५॥
छोड़ के राग द्वेष को मन में तू उसका ध्यान धर।
तुझ पै दयालु होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन ॥६॥
आप दया स्वरूप हैं आप ही का है आश्रय।
कृपा की दृष्टि कीजिये मुझ पै हो जब समय कठिन ॥७॥
मन में मेरे हो चांदना मोक्ष का रास्ता मिले।
मार के मन जो 'केवला' इन्द्रियों को करे दमन ॥८॥

भजन ११

मुझे वेद धर्म से हे पिता ! सदा इस तरह का प्यार दे ॥
कि न मोड़ूं मुंह कभी उससे मैं, कोई चाहे सिर भी उतार दे ॥
वह कलेजा राम को जो दिया वह जिगर जो बुद्धको अता किया।
वह फराख दिल दयानन्द का घड़ी भर मुझे भी उधार दे ॥
न हो दुश्मनों से मुझे गिला, करूं मैं बदी की जगह भला।
मेरे दिल से निकले सदा दुआ, कोई चाहे कष्ट हजार दे ॥

नहीं मुझको ख्वाहिशे मर्तबा न है मालो जर की हविश मुझे।
मेरी उम्र खिदमते खल्क में, परमात्मा तू गुजार दे॥
मुझे प्राणिमात्र के वास्ते, करो सोजे दिल वो अता पिता।
जलूं उनके गम में मैं इस तरह कि न खाक तक भी गुबार दे॥
मेरी ऐसी जिन्दगी हो बसर, कि हूं सुर्खरू तेरे सामने।
न कहीं मुझे मेरा आत्मा ही, यह शर्म ले लो निहार दे॥
न किसी का मर्तबा देखकर, जले दिल में नारे हसद कभी।
जहां पर रहूं रहूं मस्त मैं, मुझे ऐसा सब्रो करार दे॥
लगे जख्म दिल पे अगर किसी के, तो मेरे दिल में तड़प उठे।
मुझे ऐसा दे दिले दर्द रस, मुझे ऐसा सीना फिगार दे॥
है 'प्रेम' की यही कामना, यही एक उसकी है आरजू।
कि वह चन्दरोजा हयात को, तेरी याद ही में गुजार दे॥

भजन १२

प्रेमी भर कर प्रेम में ईश्वर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफला झाड़ू रोज लगाया कर॥ प्रेमी॥
सोने में तो रात गंवाई दिन भर करता काम रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे करता अपना आप रहा।
प्रातःकाल उठ प्रेम से सत्संगति में जाया कर॥ प्रेमी॥
दुखिया पास पड़ा है तेरे तूने मौज उड़ाई तो क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी तूने रोटी खाई तो क्या।
सबसे पहले पूछ कर भोजन को तू खाया कर॥ प्रेमी॥
नर तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्मके शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं।
नर तन पाने के लिये उत्तम कर्म कमाया कर॥ प्रेमी॥
देखो दया जगदीश्वर की वेदों का जिन ज्ञान दिया।
सोच समझले अपने मनमें कितना है कल्याण किया।
सब कर्मों को छोड़कर प्रभु को ही तू ध्याया कर॥ प्रेमी॥

प्रभु भक्ति १३

शरण प्रभु की आओ रे ! यही समय है प्यारे।
आओ प्रभु गुण गाओ रे ! यही समय है प्यारे॥
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु आओ दर्शन पाओ रे ॥१॥
अमृत झरना झरता इससे, पी के अमर हो जाओ रे ॥२॥
छल कपट और द्वेष को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे ॥३॥
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे ॥४॥
कर लो नाम प्रभु का सुमिरन, अन्त को ना पछताओ रे ॥५॥
छोटे-बड़े सब मिल के खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे ॥६॥

ईश्वर की स्तुति १४

जय-जय पिता परम आनन्द दाता।
जगदादिकारण मुक्ति-प्रदाता ॥१॥
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्ता संहाता ॥२॥
सूक्ष्म से सूक्ष्म, तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता ॥३॥
मैं लालित व पालित हूं पितृ स्नेह का।
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझसे ताता ॥४॥
करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को।
करूं मैं विनय नित्य सायं व प्रातः ॥५॥
मिटाओ मेरे भय का आवागमन के।
फिरूं ना जन्म पाता और बिलबिलाता ॥६॥
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धू।
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता ॥७॥
'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझको।
रहूं सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता ॥८॥

विनय १५

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय दास हूं तेरा।
तुझे तजकर कहां जाऊं, हितु को और है मेरा॥
भटकता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं।
दया की दृष्टि से देखो, नहीं तो डूबता बेड़ा॥
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यु का, हुआ तङ्ग हाल है मेरा।
दुखों का मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो, भरोसा नाथ है तेरा॥
क्षमा अपराध कर मेरे, फकत अब आश है तेरी।
दया 'बलदेव' पर करके, बनाले नाथ निज चेरा॥

आरती १६

ओ३म् जय जगदीश हरे,पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के सङ्कट, क्षण में दूर करे॥ १॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ २॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥ ३॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥ ४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता॥ ५॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पति।
किस विध मिलूं दयामय, तुम को मैं कुमति॥ ६॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे॥ ७॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ८॥

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के नियम ।

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है ।

२—ईश्वर, सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है ।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए ।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७—सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये ।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।

चतुरसेन गुप्त के प्रबन्ध से सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली में मुद्रित